सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 2/2020

दिनांक : 01/05/2020

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

प्रिय साथियों ,

विषय : मई दिवस अमर रहे ।

मई दिवस 2020 के अवसर पर मध्यक्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के साथ-साथ देश और दुनिया के तमाम मेहनतकश आवाम को हम सेंट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन की ओर से क्रांतिकारी अभिनंदन और अभिवादन प्रेषित करते हैं।

जब अमरीका के शिकागो शहर में मजदूर वर्ग ने आज से 134 वर्ष पूर्व, अपने कार्यावधि को 8 घंटे तक सीमित रखने की मांग पर आंदोलनरत थे, तब उन पर मालिकों के गुण्डों और पुलिस ने बर्बरतापूर्वक गोली बरसाईं जिसके चलते तीन मजदूर साथी घटनास्थल पर ही शहीद हो गये थे। कुछ साथियों को मौत की सजा दे दी गई। उन्हीं की याद में, मजदूरों के हक की लड़ाई के लिए यह सिलसिला आज तक बदस्तूर जारी है, मजदूर साथियों की शहादत को आज भी अपने दिल और दिमाग में रखते हुए मई दिवस के मौके पर उन शहीद साथियों को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए उनके संघर्ष के कारवां को आगे बढ़ाने और शोषणविहीन समाज के निर्माण के लिए अपने प्रतिबद्धता उद्घोषित करते हैं। आज पूरी दुनिया में 'करोना वायरस' के संकट ने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है। इस महामारी ने उद्योग धंधों से लेकर सामान्य जन जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है इस संक्रमण ने अगर सबसे ज्यादा किसी पर असर डाला है तो वह मजदूर और किसान वर्ग है। कोविड-19 की शुरुआत चीन से शुरु होकर धीरे-धीरे दुनिया के हर हिस्से पर असर करना शुरु कर दिया। हालांकि चीन ने इस वायरस के खतरनाक होने एवं तेजी से फैलने के बारे में दुनिया को दिसंबर माह में ही आगाह कर दिया था, लेकिन इसे लेकर किसी भी मुल्क ने उतनी गंभीरता नहीं दिखाई। फलस्वरूप चाहे इटली हो, चाहे जर्मनी, फ्रांस हो या अमेरिका, यूरोप हो या एशिया सभी देश को अपनी चपेट में ले लिया।

पूरे विश्व के वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान, वित्तीय संसाधनों को जुटाकर जीवन की रक्षा के लिए सबकी एकजुट लड़ाई की आवश्यकता है अर्थात् पूरी मानवीय ताकत से लड़कर ही इसे जीता जा सकता है। इस महामारी ने भी साम्राज्यवाद और समाजवादी व्यवस्थाओं के बीच मानव समाज के लिए उनके अंतर को स्पष्टता से रेखांकित किया। जहां अमरीका इससे बुरी तरह प्रभावित होने के बावजूद क्यूबा, वेनेजुएला, ईरान के खिलाफ आर्थिक व राजनैतिक युद्ध को जारी रखे हुए है वहीं छोटे से समाजवादी देश क्यूबा ने मानवता की रक्षा के लिए स्वयं की पहल पर इटली तथा अन्य कई देशों में अपनी चिकित्सकीय टीम भेजकर उन देशों की जनता को महामारी से निपटने सहायता उपलब्ध कराई है। विश्व नेता के रूप में अमरीकी साम्राज्यवाद के दावे का खोखलापन भी उजागर हो गया। वह अपनी जनता की रक्षा करने में नाकाम रहा, जिसका सबसे बड़ा कारण वहां सार्वजनिक स्वास्थ्य का न होना है। वहां निजी स्वास्थ्य देखभाल उन मजदूरों के बहुमत के लिए अप्रभावी है जिनके पास स्वास्थ्य बीमा नहीं है। सार्वजनिक अस्पतालों में भी चिकित्सा कर्मियों के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण- आईसीयू, वेंटिलेटर पर्याप्त नहीं हैं। जो देश दुनिया में हथियारों का बड़ा सौदागर है और उसके बल पर धमकियां देकर दुनिया में दादागिरी करता है वह अपने ही जनता को आवश्यक चिकित्सा उपलब्ध कराने में नाकाम है। यही है साम्राज्यवाद का असली चेहरा। दूसरी ओर समाजवादी देश हैं जहां मानवता ही सर्वोपरि है, क्यूबा उसी का उदाहरण है।

इस महामारी से उपजे संकट में तालाबंदी के कारण करोड़ों लोगों में अपनी आजीविका खो दी। संकट के नाम पर बड़े कार्पोरेट बड़े पैमाने पर कर्मचारियों की छंटनी, वेतन, बोनस कटौती कर रहे हैं। काम के घंटे बढ़ा रहे हैं। श्रम कानून बदल रहे हैं, महामारी में भी मुनाफा ही उनके लिए सर्वोपरि है। वहीं उनका ईश्वर है। राम, जीजस या अल्लाह नहीं, वे केवल जनता को बांटने और एक-दूसरे से लड़ाने के लिए धार्मिक आस्थाओं का उपयोग करते हैं।

हम अपने देश के बारे में बात करें तो मार्च के मध्य में इस पर कुछ-कुछ चर्चा शुरु हुई और 22 मार्च को 1 दिन का देशव्यापी जनता कर्फ्यू लगाकर फिर 24 मार्च 2020 को प्रधानमंत्री ने 25 मार्च से 14 अप्रैल तक 21 दिन का 'लॉकडाउन' पूरे देश के पैमाने पर लागू करने की बात कही। नि:संदेह यह आवश्यक भी था, किंतु इस लाकडाउन को लागू करने से पहले इस पर क्या कोई चर्चा या इसकी कोई तैयारी सरकार ने कर रखी थी या नहीं इसकी कोई जानकारी नहीं है। इससे पूरे देश में एक अजीब किस्म की हालत पैदा हो गई। सबसे ज्यादा उन लाखों मजदूरों पर जो अपने घर से सैकड़ों मील दूर रोजी-रोजी के लिए बाहर गये थे, इस लॉकडाउन का असर पड़ा और आज भी इस स्थिति में कोई बदलाव नहीं हो पाया है। लॉकडाउन 3 मई तक के लिए बढ़ा दिया गया। लाखों की तादाद में छात्र, किसान, दैनिक भोगी मजदूर अपने घर से सैकड़ों मील दूर असहाय स्थिति में है। आने वाला समय निश्चित रूप से भयावह होने वाला है। रोजगार का संकट पहले से ही अपने 45 साल के उच्चतम स्तर पर था और करोना संकट से कितने लाख लोग रोजगारीहीन हो जाएंगे, कहना मुश्किल है। लाकडाउन कोई स्थायी हल नहीं है क्योंकि इसे अनिश्चितकाल तक लागू नहीं रख सकते। इसके साथ-साथ अर्थव्यवस्था पर भी ध्यान देना होगा। मजदूर किसान के लिए विशेष राहत पैकेज की आवश्यकता है। इस दौरान किसी को रोजगार से हाथ न धोना पड़े इसके लिए सरकार को अपील नहीं आदेश देना होगा। साथ ही साथ करोना वायरस की जांच के लिए आवश्यक मेडिकल सेवा सुलभ कराना होगा। मेडिकल स्टाफ को सुरक्षा तथा जरूरी सामान मुहैया कराना और सबसे ज्यादा जरूरी और अहम कार्य सरकार को करना होगा वह है कि देश के अंदर सांप्रदायिक सौहार्द्र को कायम रखना। वर्तमान में ऐसा लग रहा है कि कुछ निहित स्वार्थी तत्व इस सदभावना को हर हालत में बिगाड़ना चाहते है, इससे देश का कभी भला नहीं होने वाला है।

किन्तु केन्द्र सरकार ने अपने ही कर्मचारियों और पेंशनधारियों पर मंहगाई भत्ते की कटौती थोप दी है। बड़े औद्योगिक संगठन अपने कर्मचारियों को वेतन न देने के लिए न्यायालय की शरण में पहुंच गये हैं। इस अमानवीय हालत में भी केन्द्र सरकार श्रम कानूनों में बदलाव की साजिश रच रही है। वह काम के घंटे 8 से बढ़ाकर 12 करने प्रयत्नशील है। इस संकट काल में सार्वजनिक क्षेत्र ने फिर से अपनी महत्ता और निजीकरण के दुष्परिणामों को उजागर किया है। परिवहन की चाहे हवाई हो या अन्य माध्यम के साथ ही हर हिस्से की सार्वजनिक सेवाओं और संस्थाओं की भूमिका सराहनीय रही है। सार्वजनिक अस्पताल, डॉक्टर, नर्स, पैरा मेडिकल स्टाफ स्वच्छता कर्मी ही हैं जो जीवन को बचाने और वायरस को रोकने के लिए 24 घंटे काम कर रहे हैं। भारत सहित लगभग सभी पूंजीवादी देशों में चिकित्साकर्मी अपनी जान जोखिम में लगाकर बिना आवश्यक संसाधनों के भी एक सैनिक की तरह यह युद्ध लड़ रहे हैं। हम इन सभी का अभिनंदन करते हैं। भारत में स्वास्थ्य पर सार्वजनिक व्यय जीडीपी का 1 प्रतिशत है। स्वास्थ्य सेवाएं निजीकृत हो गई हैं। कुछ राज्यों में तो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भी निजी हाथों में दिये जा रहे हैं। हमें निश्चय ही सार्वजनिक स्वास्थ्य की हिफाजत के लिए एकजुट होना होगा। केरल राज्य ने इस लड़ाई में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के जरिये एक अतुलनीय विकल्प पेश किया है।

इस परिस्थिति में अगर हम भारतीय जीवन बीमा निगम की बात करें तो हम देखते हैं कि इस विषम परिस्थिति में भी हमारा उद्योग व्यवसाय के लिहाज से प्रगति के पथ पर अग्रसर है। एलआईसी ने नवव्यवसाय और प्रीमियम आय में अभूतपूर्व प्रगति की है। साथ ही इस विपरीत परिस्थिति में भी समय पर दावों का निष्पादन किया है। इससे सिद्ध होता है कि आज भी आम जनता के दिलो दिमाग में एलआईसी की छवि शानदार रूप से बरकरार है। हालांकि अर्थव्यवस्था के सामने मौजूदा संकट से उपजी चुनौतियों का आगे हमें सामना करना होगा।

देश व दुनिया के सामने भीषण परिस्थिति के मध्य एआईआईईए ने इस मुश्किल घड़ी में मजदूर,किसान, गरीब, बेसहारा लोगों के लिए अपने सीमित सदस्य संख्या के बाजवूद देश के अलग अलग राज्यों में मुख्यमंत्री राहत कोष में लगभग चार करोड़ दान दिया है। इसी तरह एआईआईईए ने तत्काल ही पांच लाख रुपये प्रधानमंत्री राहत कोष में दिये थे। इसके अतिरिक्त हमारे साथियों के द्वारा भोजन के पैकेट तथा अन्य राहत सामग्री का वितरण भी जरूरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य लगातार जारी रखे हुए हैं। निश्चित रूप से ये तमाम साथी बधाई एवं अभिनंदन के पात्र हैं।

आईए, हम इस मई दिवस पर शपथ लें कि जब तक इस महामारी से देश-मुक्त नहीं हो जाता, हम तन, मन, धन से एकजुट होकर इस लड़ाई को लड़ेंगे और इसे परास्त कर ही दम लेंगे। यह समय दोस्त व दुश्मन की पहचान करने का भी समय है। हमें एक ओर महामारी से लड़ने एकजुट होना है तो दूसरी ओर हमारे जीवन व अधिकारों पर किये जा रहे हमले के खिलाफ तथा हमारी एकता को विखंडित करने वाली सांप्रदायिक कोशिशों के खिलाफ भी एकजुट होना होगा। मई दिवस 2020 का यही संदेश है। एक बार पुन: मई दिवस के लिए असंख्य अभिनंदन।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)

महासचिव